



वर्ष 2

जुलाई-सितम्बर 2010

अंक 6

सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आई.आर.) का स्थापना दिवस संस्थान में 26.09.2010 को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने संस्थान में नवनिर्मित "विनियामक अनुसंधान केन्द्र" के भवन का उद्घाटन किया।

अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने सी.एस.आई.आर. की स्थापना दिवस तथा उसकी उपलब्धियों द्वारा देश को विश्वभर में गौरवान्वित करने के लिए बधाई दी। उन्होंने अपने संबोधन में आई.एच.बी.टी. को लाहौर स्पीति में उच्च तुंगता अनुसंधान केन्द्र की स्थापना करने के लिए हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।



मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल "विनियामक अनुसंधान भवन का उद्घाटन करते हुए



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश



कम्पनियां केवल मुनाफे के लिए ही इस क्षेत्र में हैं।

इस अवसर पर प्रदेश के सिंचाई मंत्री श्री रविन्द्र रवि, मुख्य संसदीय सचिव श्री वीरेन्द्र कंवर, राजगीर के विधायक श्री आत्मा राम, पालमपुर के विधायक श्री प्रवीण शर्मा, वूल फेडरेशन के अध्यक्ष श्री त्रिलोक कपूर, कुलपति कृषि विश्वविद्यालय डा. एस. के. शर्मा, उपायुक्त श्री आर. एस. गुप्ता, एस.पी. कांगड़ा, एस.डी.एम. पालमपुर श्री रतन गौतम सहित प्रदेश के कई गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने 'हर्बेरियम केटालॉग' और 'गुलाब की खेती' पर बुलेटिन का विमोचन भी किया।

प्रातः कालीन समारोह में राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, मोहाली के निदेशक डा. के. के. भुटानी ने "औषधि खोज एवं विकास: भारतीय परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता" विषय पर स्थापना दिवस संभाषण दिया। अपने संबोधन में डा. भुटानी ने बताया कि भारत जैसे विशाल देश में औषधि खोज और विकास की अत्याधिक आवश्यकता है क्योंकि विदेशी



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश



इसके पूर्व संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा सी.एस.आई.आर. की प्रमुख प्रयोगशालाओं एवं संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि संस्थान सेब के अवशेष से कई प्रकार के उत्पादों को बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। स्टीविया के क्षेत्र में भी संस्थान ने विशेष योगदान दिया है। परम्परागत ज्ञान के प्रलेखन और विनियामक शोध में संस्थान अग्रणी भूमिका निभाने जा रहा है।



राष्ट्रीय गोष्ठी

संस्थान में 'स्टीविया की संभावनाएं' विषय दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारम्भ 24 सितम्बर 2010 को योजना आयोग के पूर्व

सदस्य पदमभूषण डा. वी.एल. चोपड़ा ने किया। स्टीविया एक झाड़ीनुमा पौधा है जो शून्य कैलरीयुक्त मीठाकारक प्रदान करता है। यह चीनी से 300 गुणा अधिक मीठा होता है तथा शून्य कैलोरी आहार के रूप में मधुमेह के रोगियों के लिए आदर्श है।



अपने स्वागत भाषण में संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने आए हुए प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संस्थान की प्रमुख गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. वी. एल. चोपड़ा ने अपने उद्घाटन भाषण में स्टीविया की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में इस फसल का भविष्य

उज्ज्वल है तथा किसान एवं उद्यमी उचित लाभ अर्जित कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि आवश्यकता है कि स्टीविया की कृषि व्यापक स्तर पर हो ताकि सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक विकास सुनिश्चित व स्थायी हो सके।



इस दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्देश्य शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्यमियों को राष्ट्रीय स्तर पर इस फसल से संबन्धित विविध पहलुओं पर एक दूसरे से विचार



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश

सांझा करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। इस संगोष्ठी में स्टीविया की खेती, आनुवंशिक सुधार, जिनोमिक्स और मेटाबोलोमिक्स, फसलोपरांत प्रौद्योगिकी और विनियामक मुद्दों से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। तकनीकी सत्रों में इस फसल पर नवीनतम प्रगति और प्रयोग को व्यक्त करने वाले मौखिक तथा पोस्टर प्रस्तुति



संगोष्ठी के दौरान स्टीविया से बने व्यंजनों की प्रदर्शनी लगाई गई यह व्यंजन संस्थान के स्टाफ के परिवारों द्वारा तैयार किया गया। संस्थान के निदेशक सहित एक समिति ने व्यंजनों का निरीक्षण किया। फलतः इनको स्वाद की कसौटी पर परखते हुये प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

के अतिरिक्त प्रख्यात वैज्ञानिकों के आमंत्रित व्याख्यान भी हुए। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों से वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, उद्योगों के प्रतिनिधियों सहित लगभग 100 प्रतिभागियों ने इस फसल से संबंधित मुद्दों पर अपने विचार सांझा किए।

आमंत्रित व्याख्यान

डा. मेरिना बारबा, निदेशक ने 2 जुलाई 2010 को "पादप रोग अनुसंधान केन्द्र : प्रमुख गतिविधियां (Plant Pathology Research Centre: Main activities)" विषय पर व्याख्यान दिया



डा. मेरिना बारबा का संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा सम्मान करते हुए।

डा. एम. एल. शर्मा, प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ने संस्थान में 3 सितम्बर 2010 को 'अल्ट्रामाइक्रोटॉमी के लिए पादप नमूनों की तैयारी तथा इसकी सीमाएं' विषय पर व्याख्यान दिया।

विदेश यात्रा

डा. गोपालजी झा, वैज्ञानिक बायकास्ट फेलोशिप के अन्तर्गत 15 जुलाई 2010 से एक वर्ष के लिए सेन्सबरी लेबोरेटरी, यु.के. गए।

भारतीय विज्ञान अकादमी के ग्रीष्मकालीन शोध फेलो के रूप में डा. के. महादेव, सहायक प्रोफेसर ने संस्थान के निदेशक डा. पी.एस. आहूजा के मार्गदर्शन में 'चाय में विभिन्न आण्विक चिह्नों की पहचान और उपयोग' विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

संस्थान में दिनांक 24 सितम्बर 2010 को एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। संस्थान के शोध छात्रों तथा स्टाफ के बच्चों ने भी रंगारंग

कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे सभी ने काफी सराहा। निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया।

पुरस्कार एवं सम्मान

वनस्पति वन विकास संस्था, आयुर्वेद विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा "आई.एस.एम. के क्षेत्रीय संस्थान, जोगिन्द्रनगर, जिला मण्डी हिमाचल प्रदेश में द्रव्यगुण एवं औषधीय पौधों के उत्कृष्ट केन्द्र" परियोजना हेतु डा. बृजलाल को अनुवीक्षक समिति का सदस्य नामित किया गया।

बैठक में प्रतिभागिता

डा. बृजलाल ने आई.एच.बी.टी. में सितम्बर 8, 2010 को आयुर्वेदिक भेषज समिति (भारत सरकार द्वारा गठित एक अग्रणी समिति) की एक बैठक का आयोजन किया।

संस्थान में 9 जुलाई 2010 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग द्वारा प्रायोजित परियोजना प्रौद्योगिकी एवं

नवोन्मेष प्रबन्धन केन्द्र, आई.एच.बी.टी.
पालमपुर में संस्थान एवं उद्योगों में



परस्पर सहयोग हेतु बैठक का आयोजन
किया गया।

परियोजना के अंतर्गत 30 सितंबर 2010
को चम्बा में किसानों के को औषध एवं
सगंध पौधों के विषय में जानकारी प्रदान
की गई।



विशेष उपलब्धियाँ

आई.एच.बी.टी. पालमपुर में जुलाई 28-
29, 2010 को राष्ट्रीय सुदूर संवेदी केन्द्र
(एन.आर.एस.सी.-इसरो), हैदराबाद एवं
हिमालय जैवसम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान,
सी.एस.आई.आर., पालमपुर के सहयोग
से “Geospatial Decision Support for
Greening India Initiative – Resilience
and Mitigating Perspectives of Indian Ve-
getation Under Climate Change” के
अन्तर्गत एक संयुक्त सहयोगात्मक
कार्यक्रम आरम्भ करने हेतु चर्चा हुयी।
दोनों संस्थानों में उपर्युक्त
हेतु सहयोग के लिए एक समझौता
जापन भी तैयार किया गया।

Research Papers

Ayman Omar F, Kumar Yogesh, Hallan Vipin, Zaidi Aijaz A (2010) Molecular characterization of the phytoplasmas associated with toon trees and periwinkle in India. *Journal of General Plant Pathology*, 76 (5): 351-354.

Bhattacharya Amita, Sood Priyanka and Citovsky Vitaly (2010) The roles of plant phenolics in defence and communication during *Agrobacterium* and *Rhizobium* infection. *Molecular Plant Pathology*, 11 (5): 705-719.

Bhatti Shammi and JhaGopaljee (2010) Current trends and future prospects of biotechnological interventions through tissue culture in apple. *Plant Cell Reports*, 29 (11): 1215-1225.

Chawla Amit, Amit Kumar, S. Rajkumar, Singh RD, Thukral AK and Ahuja PS (2010) Correlation of multispectral satellite data with plant species diversity *vis-à-vis* soil characteristics in a landscape of western Himalayan region, India. *Applied Remote Sensing* 1(1):1-13.

Gulati Arvind, Sharma Natasha, Vyas Pratibha, Sood Swati, Rahi Praveen, Pathania Vijaylata and Prasad Ramdeen(2010) Organic acid production and plant growth promotion as a function of phosphate solubilization by *Acinetobacter rhizosphaerae* strain BIHB 723 isolated from the cold deserts of the trans-Himalayas. *Archives of Microbiology*, 192 (11): 975-983.

Jaitak Vikas, Kaul Vijay K, Himlata, Kumar Neeraj, Singh Bikram, Dhar Jyoti and Sharma Om P (2010) New Hopane Triterpenes and Antioxidant Constituents from *Potentilla fulgens*. *Natural Product Communications*, 5 (10): 1561-1566.

Kawoosa Tabasum, Singh Harsharan, Kumar Amit, Sharma Sunil Kumar, Devi Kiran, Dutt Som, Vats Surender Kumar, Sharma Madhu, Ahuja Paramvir Singh and Kumar Sanjay (2010) Light and temperature regulated terpene biosynthesis: hepatoprotective monoterpene picroside accumulation in *Picrohiza kurrooa*. *Functional & Integrative Genomics*, 10 (3): 393-404.

grative Genomics, 10 (3): 393-404.

Khattar JIS, Singh DP, Jindal Namita, Kaur N, Singh Y, Rahi P, Gulati A (2010) Isolation and Characterization of Exopolysaccharides Produced by the Cyanobacterium *Limothrix redekei* PUPCCC 116. *Applied Biochemistry and Biotechnology*, 162 (5): 1327-1338.

Kumar Vineet, Yadav Subhash C and Yadav Sudesh Kumar (2010) Syzygium cumini leaf and seed extract mediated biosynthesis of silver nanoparticles and their characterization. *Journal of Chemical Technology and Biotechnology*, 85 (10): 1301-1309.

Kumar Amit, Meenakshi, Uniyal Sanjay Kumar, Lal Brij, Chawla Amit, Rajkumar S and Ahuja PS (2010) HimFlorIS - an information system for flora in Himachal Pradesh, India. *Current Science*, 99 (1): 98-101.

Kumar R and Sharma S (2010) Allometric model for nondestructive leaf area estimation in clary sage (*Salvia sclarea* L.). *Photosynthetica*, 48 (2): 313-316.

Kumar Rakesh, Mohanakrishnan Dinesh, Sharma Abhishek, Kaushik NK, Kalia Kalpana, Sinha Arun Kumar and Sahal Dinkar (2010) Re-investigation of structure-activity relationship of methoxylated chalcones as antimalarials: Synthesis and evaluation of 2,4,5-trimethoxy substituted patterns as lead candidates derived from abundantly available natural beta-asarone. *European Journal of Medicinal Chemistry*, 45 (11): 5292-5301.

Kumari Avnesh, Yadav Sudesh Kumar, Pakade Yogesh B, Kumar Vineet, Singh Bikram, Chaudhary, Abha and Yadav Subhash Chandra(2011) Nanoencapsulation and characterization of *Albizia chinensis* isolated antioxidant quercitrin on PLA nanoparticles. *Colloids and Surfaces B-Biointerfaces*, 82 (1): 224-232.

Kumari Avnesh, Yadav Sudesh Kumar, Pakade Yogesh B, Singh Bikram and Yadav Subhash Chandra (2010) Development of biodegradable nanoparticles for delivery of quercetin. *Colloids and Surfaces B-Biointerfaces*, 80 (2): 184-192.

- Mabwoga Samson Okongo, Chawla Amit, Thukral Ashwani Kumar (2010) Assessment of water quality parameters of the Harike wetland in India, a Ramsar site, using IRS LISS IV satellite data. *Environmental Monitoring and Assessment*, 170 (1-4): 117-128.
- Malik Sonia, Sharma Nandini, Sharma Upendra K, Singh Narendra P, Bhushan Shashi, Sharma Madhu, Sinha Arun K and Ahuja Paramvir S (2010) Qualitative and quantitative analysis of anthraquinone derivatives in rhizomes of tissue culture-raised *Rheum emodi* Wall. plants. *Journal of Plant Physiology*, 167 (9): 749-756.
- Mamta, Rahi Praveen, Pathania Vijaylata, Gulati Arvind, Singh, Bikram, Bhanwra Ravinder Kumar, Tewari Rupinder (2010) Stimulatory effect of phosphate-solubilizing bacteria on plant growth, stevioside and rebaudioside-A contents of *Stevia rebaudiana* Bertoni. *Applied Soil Ecology*, 46 (2): 222-229.
- Rattan Rameshwar Singh (2010) Mechanism of action of insecticidal secondary metabolites of plant origin. *Crop Protection*, 29 (9): 913-920.
- Shanmugam Veerubommu, Ronen Mordechai, Shalaby Samer, Larkov Olga, Rachamim Yocheved, Hadar Ruthi, Rose Mark S, Carmeli Shmuel, Horwitz Benjamin A and Lev Sophie (2010) The fungal pathogen *Cochliobolus heterostrophus* responds to maize phenolics: novel small molecule signals in a plant-fungal interaction. *Cellular Microbiology*, 12 (10): 1421-1434.
- Sharma Dipakshi, Nagpal Avinash, Pakade Yogesh B, Katnoria Jatinder Kaur (2010) Analytical methods for estimation of organophosphorus pesticide residues in fruits and vegetables: A review. *Talanta*, 82 (4): 1077-1089.
- Sharma RK, Negi MS, Sharma S, Bhardwaj P, Kumar R, Bhattacharya E, Tripathi SB, Vijayan D, Baruah AR, Das SC, Bera B, Rajkumar R, Thomas J, Sud RK, Muraleedharan N, Hazarika M, Lakshminikumar M, Raina SN and Ahuja PS (2010) AFLP-Based Genetic Diversity Assessment of Commercially Important Tea Germplasm in India. *Biochemical Genetics*, 48 (7-8): 549-564.
- Sharma U, Kumar P, Kumar N and Singh, B (2010) Recent Advances in the Chemistry of Phthalimide Analogues and their Therapeutic Potential. *Mini-Reviews In Medicinal Chemistry*, 10 (8): 678-704.
- Sharma Upendra, Kumar Praveen, Kumar Neeraj, Kumar Vishal, and Singh Bikram (2010) Highly Chemo- and Regioselective Reduction of Aromatic Nitro Compounds Catalyzed by Recyclable Copper(II) as well as Cobalt(II) Phthalocyanines. *Advanced Synthesis & Catalysis*, 352 (11-12): 1834-1840.
- Singh RD, Gopichand, Meena Ramjee Lal, Sharma Babita, Singh Bikram, Kaul VK and Ahuja PS (2010) Seasonal variation of bioactive components in *Valeriana jatamansi* from Himachal Pradesh, India. *Industrial Crops and Products*, 32 (3): 292-296.
- Tiwari Jagesh K, Poonam, Sarkar D, Pandey S K, Gopal Jai, and Kumar S Raj (2010) Molecular and morphological characterization of somatic hybrids between *Solanum tuberosum* L. and *S. etuberosum* Lindl. *Plant Cell Tissue and Organ Culture*, 103 (2): 175-187.
- Uniyal Sanjay Kr, Parkash Om and Singh RD (2010) Spatial redistribution of *Soliva anthemifolia* (Juss) R. Br. - possible manifestation of changing climate. *Current Science*, 99 (7): 898-899.
- Yadav Subhash Chandra, Jagannadham Medicherla V, Kundu Suman (2010) Equilibrium unfolding of kinetically stable serine protease milin: the presence of various active and inactive dimeric intermediates. *European Biophysics Journal With Biophysics Letters*, 39 (10): 1385-1396.
- Yadav Sudesh Kumar (2010) Cold stress tolerance mechanisms in plants. A review. *Agronomy for Sustainable Development*, 30 (3): 515-527.

उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल का संस्थान में दौरा

आयुष विभाग, भारत सरकार का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने संस्थान का दौरा किया तथा शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण कई विषयों पर संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया। इससे पूर्व इस प्रतिनिधिमंडल को संस्थान की शोध के क्षेत्र में चल रही गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रतिनिधिमंडल ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। प्रतिनिधिमंडल ने संस्थान की प्रयोगशालाओं में उपलब्ध यंत्रों तथा इनके के प्रबंधन की सराहना की।



प्रतिनिधिमंडल संस्थान में एक बैठक में विचारविमर्श करते हुए।



प्रतिनिधिमंडल प्रयोगशाला में संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह अहूजा के साथ विचार-विमर्श करते



प्रतिनिधिमंडल प्रयोगशाला में अभियन्त्रों का अवलोकन करते हुए

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश

स्वतन्त्रता दिवस

स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त 2010) के अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर संस्थान में कार्यरत स्टाफ के परिवारों एवं बच्चों ने भाग लिया।



संस्थान के निदेशक द्वारा स्टाफ क्लब की पत्रिका मंथन का विमोचन



संस्थान के निदेशक द्वारा सुरक्षा दस्ते का निरीक्षण



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश

प्रशिक्षण

नाबार्ड के सौजन्य से हिमाचल प्रदेश के पांच जिलों - कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना,



कुल्लू तथा चम्बा के लगभग 125 प्रतिभागियों को 'ऊत्क संवर्धन तकनीक' विषय में प्रशिक्षण 26-31 जुलाई, 2010 को दिया गया।



प्रतिभागियों द्वारा प्रयोगशाला का भ्रमण

हमीरपुर से श्री सुदीप कुमार गुप्ता को भी 2-13 अगस्त तक उपर्युक्त विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।

व्याख्यान

डा. अनिल सूद, वैज्ञानिक ने फिक्की (FICCI) भवन, नई दिल्ली में 11 जुलाई 2010 को आयोजित स्टीविया ग्लोबल सम्मेलन-2010 में प्रतिभागिता की तथा संस्थान में स्टीविया पर किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्रदान की।

डा. अनिल सूद, वैज्ञानिक ने नागालैंड बांस बोर्ड तथा राष्ट्रीय बांस मिशन (भारत सरकार) द्वारा कोहिमा में 15-17 सितम्बर 2010 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'बांस प्रवर्धन' विषय पर व्याख्यान दिया तथा 'विश्व बांस दिवस' में भी भाग लिया।

डा. सोम दत्त, वैज्ञानिक ने केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ में दिनांक 26-28 सितम्बर 2010 को आयोजित (NCAFPI-2010) में 'A Copper-Zinc Superoxide Dismutase based Electrochemical Biosensor for Determination

of Superoxide Radical' विषय पर व्याख्यान दिया।

डा. अषु गुलाटी, वैज्ञानिक ने केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ में दिनांक 26-28 सितम्बर 2010 को आयोजित (NCAFPI-2010) में 'Application of electronic sensors for predicting tea quality' in the national Bilingual conference on Agrionics and food Processing Instrumentation' विषय पर व्याख्यान दिया।

डा. अषु गुलाटी, वैज्ञानिक ने चाय अनुसंधान संघ, टोकलाई द्वारा दिनांक 3 सितम्बर 2010 को आयोजित 'चाय गुणवत्ता वृद्धि तथा त्वरित मापन' विषय पर आयोजित कार्यशाला में 'Orthodox Black Tea and Application of E-vision and E-tongue' विषय पर व्याख्यान दिया।

डा. अरुण कुमार सिन्हा ने डी.ए.वी. कालेज, अमृतसर में दिनांक 28-29 सितम्बर को 'हरित रसायनिकी: नूतन प्रवृत्ति और उपयोग' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्याख्यान दिया।

डा. संजय कुमार, वैज्ञानिक ने पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिण्डा में दिनांक 28 सितम्बर 2010 को स्टाफ व छात्रों

को विषय 'Bioprospecting Himalayan flora for plant adaptation and metbaolic engineering' पर व्याख्यान दिया।

पुरस्कार

नैना शर्मा, उपेन्द्र कुमार शर्मा, अजय प्रकाश गुप्ता, ए. देवला, अरुण कुमार सिन्हा, बृज लाल एवं परमवीर सिंह आहूजा के शोध पत्र Simultaneous densitometric determination of shikonin, acetylshikonin and α -acetoxylsivalerylshikonin in ultrasonic-assisted extracts of four Arnebia species using reversed-phase thin layer chromatography (J. of Separation Science 32, 3239-3245) को एचपीएलटीसी का प्रयोग करते हुए सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लिए डा. पी.डी. सेठ पुरस्कार 2009 प्राप्त हुआ।

दूरदर्शन वार्ता

वर्षाकालीन अच्छी फसल के लिए चाय बागान प्रबन्धन दिनांक 2 जुलाई 2010 वक्ता डा. आर. के. सूद। गुलदाउदी की कृषि तकनीक। 3 सितम्बर 2010, वक्ता डा. मारकण्डेय सिंह 'बांस से कोयला बनाने की विधियां' विषय पर दर्पण टी.वी. चैनल पर 7 जुलाई को एक वार्ता प्रस्तुत की।

बुलेटिन का विमोचन

माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने 'गुलाब की खेती' और 'हर्वेरियम केटालॉग' पर बुलेटिन का विमोचन किया।



गुलाब की खेती के बुलेटिन का विमोचन



हर्वेरियम केटालॉग बुलेटिन का विमोचन

माननीय मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने हिमाचल प्रदेश के स्कूल बोर्ड की परीक्षा में विज्ञान विषय में उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सी. एस. आई. आर., दिल्ली द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मानित किया।



संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा विद्यार्थी को सम्मानित करते हुये।



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश

सम्मान (सी.एस.आई. आर., नई दिल्ली)

सी.एस.आई.आर., नई दिल्ली ने आपने कर्मचारियों को 25 वर्ष के कार्यकाल की सेवा के बाद सम्मानित करने की एक योजना शुरू की है। इस योजना के अंतर्गत माननीय मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने सी.एस.आई. आर. की हिमाचल के पालमपुर में स्थित एकमात्र प्रयोगशाला आई. एच. बी. टी. के सेवानिवृत्त एवं 25 वर्ष की सेवा पूर्ण होने के उपरांत निम्नलिखित कर्मचारियों को सम्मान प्रदान किया:



श्री अशोक कुमार राय, पूर्व वित्त एवं लेखा अधिकारी, आई. एच. बी. टी. (सी.एस.आई. आर.), पालमपुर अपनी सेवानिवृत्ति के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी से सम्मान प्राप्त करते हुए



श्री सुरेश सूद, पूर्व तकनीकी सहायक, आई. एच. बी. टी. (सी.एस.आई. आर.), पालमपुर अपनी सेवानिवृत्ति के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी से सम्मान प्राप्त करते हुए



श्री नरेश कुमार, तकनीकी सहायक, आई. एच. बी. टी. (सी.एस.आई. आर.), पालमपुर अपने 25 वर्ष के कार्यकाल के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी से सम्मान प्राप्त करते हुए

हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

संस्थान में हिन्दी दिवस समारोह-2010 दिनांक 14 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

अपने स्वागत भाषण में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. आर. डी. सिंह ने हिन्दी दिवस के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए संस्थान की हिन्दी संबन्धी गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया।



संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने अपने संबोधन में संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा बताया कि कैसे संस्थान अपने शोध को सरल राजभाषा हिंदी में विभिन्न माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है। उन्होंने वैज्ञानिकों तथा शोध छात्रों से

आह्वान किया कि वे आने वाले समय में वैज्ञानिक उपलब्धियों को आम जनता तक पहुंचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा हिन्दी विज्ञान लेख लोकप्रिय पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित करें।

समारोह के मुख्य वक्ता हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के कुलपति डा. एस. के. शर्मा ने 'कृषि जैवविविधता प्रबन्धन' पर संभाषण दिया। उन्होंने बताया कि भारत विश्व के जैवविविधता समृद्ध देशों में से एक है। विश्व में फसलों, पशुओं, मछलियों, कीटों आदि में जितनी विविधता इस देश में है उतनी किसी ओर देश में नहीं है। उन्होंने इस जैवविविधता के संरक्षण और



प्रबन्धन पर बल दिया क्योंकि जलवायु परिवर्तन आदि समस्याओं से कई प्रकार की विविधता नष्ट हो चुकी है या होने की कगार पर है। अतः सामूहिक प्रयास करके ही इस जैवविविधता को बचाया जा सकता है।



हिन्दी सप्ताह के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों और प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए हिन्दी में लोकप्रिय विज्ञान लेखन, हिन्दी टिप्पण लेखन प्रतियोगिताओं एवं हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य के लिए कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

समझौता

सितम्बर 10, 2010 को आई.एच.बी.टी. एवं वन्य जीव संस्थान, वन विभाग हि.प्र. के मध्य उच्च हिमालय राष्ट्रीय उद्यान (जीएचएनपी), वन्य जीव अभयारण्यों (डब्ल्यूएलसी) में वनस्पतियों तथा उनके प्रवास विविधता से सम्बन्धित दीर्घकालीन पारिस्थितिक अध्ययन की तुलना के लिए आंकड़ा संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये।

आई.एच.बी.टी. में सांस्कृतिक कार्यक्रम

आई.एच.बी.टी. में "स्टीविया की संभावनाएं" विषय पर संगोष्ठी के दौरान 25 सितम्बर 2010 को संस्थान के सभागार में एक रंगारंग सांस्कृतिक



कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय तथा संस्थान के छात्रों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में आए प्रतिभागियों ने प्रस्तुत कार्यक्रमों का खूब आनंद उठाया।



संस्थान की जैवसंपदा



लैवेन्डर

लैवेन्डर (लैवेन्डुला ऑफिसिनेलिस लिन., पर्यायनाम लै. एंगुस्टीफोलिया) लैमिएसी कुल का एक छोटी झाड़ीनुमा बहुवर्षीय मेडिटेरिनियन वातावरण का पौधा है। इसके बैंगनी रंग के सरस व सगंध ताजे पुष्पों के वाष्पीय आसवन से व्यावसायिक उपयोग का उइनशील सगंध तेल प्राप्त होता है। लैवेन्डर विभिन्न गुणों एवं उपयोगों के कारण सगंध पौधों के संसार में एक अति विशिष्ट स्थान रखता है।

वितरण और उत्पादन- विश्व में बुल्गेरिया, फ्रांस, इंग्लैंड, तस्मानिया, चीन, स्पेन, पुर्तगाल, मोल्दाविया और पूर्व रूस के क्षेत्रों में लैवेन्डर की खेती मुख्य रूप से की जाती है। विश्व में, अधिकतर यूरोप में, लगभग 1000 टन लैवेण्डीन तेल तथा 200 टन वास्तविक लैवेण्डर तेल का उत्पादन होता है। भारत प्रतिवर्ष लगभग 40 टन पुनर्निर्मित लैवेन्डर और लैवेण्डीन तेल आयात

करता है। आयातित तेल विभिन्न ग्रेड का होता है तथा इसे शुद्ध तेल नहीं कहा जा सकता।

उपयोग-विश्व बाजार में लैवेन्डर आधारित बहुत से सगंध एवं सौन्दर्य प्रसाधन जैसे कि शैम्पू, बॉडी मॉशराइजर, जैल, बाथ सोप, क्रीम, बॉडी वाश, वाइपैस, कुशन, गेड लाइनेन मिस्ट, फोमिंग फेस वाश, हैंड क्रीम, बॉडी स्क्रबर, अरोमाथेरेपी केन्डल आदि आधुनिक उत्पाद उपलब्ध हैं।

जलवायु- लैवेन्डर शीतोष्ण जलवायु वाला पौधा है अतः ऊँचे क्षेत्रों में शुष्क शीतोष्ण वाली जलवायु इसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।

स्थल एवं मृदा- लैवेन्डर के लिए चुने जाने वाला स्थान धूपयुक्त, पानी की उचित निकासी एवं खरपतवार रहित हो। इसकी पौध को ढलानों में दक्षिण-पश्चिम ढलानों की दिशा में लगाना चाहिए। गहरी, उर्वर और दोमट मिट्टी जिनका पी.एच. सामान्य से क्षारीय हो, में यह फसल अच्छी प्रकार से उगती है। अम्लीय मिट्टी में पी.एच. के समावेश के लिए चूने को मिलाना चाहिए।

प्रकाशक:

डा. परमवीर सिंह आरूजा
निदेशक

आई.एच.बी.टी., पालमपुर

दूरभाष: 01894-230411 फ़ैक्स: 01894-230433

E-mail : director@ihbt.res.in

Website : <http://www.ihbt.res.in>

संकलन एवं संपादन :

डा. आर. डी. सिंह, विज्ञानी

श्री मुख्त्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी एवं

श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश